३ यद्यपि व्याकरण शब्दमात्रके नामसे मनुष्य एकसाथ कहने लगतेहैं कि, यह कठिन विद्याहै, तिसमें श्री पाणिनीय व्याकरणकी कठिनता सबपर विदितहीहै कि, यदि अध्यापककी बुद्धि चमत्कारिणी और पढानेकी शैली यथायोग्य न हो तो विद्यार्थी वर्षोंतक कंठस्थ करकैभी आशयानभिज्ञ रहतेहैं यही कठिनता दूर करनेके निमित्त बहुतसे विद्वानोंने सूत्रोंकी भाषा लिखकर विद्यार्थियोंके उपकारार्थ बहुतसे ग्रंथ व्याकरणके निर्माण कियेहैं यह लिंगबोध ग्रंथ उसी पाणिनीय व्याकरणका वोह भागहै कि, जिसके पढनेसे शब्दोंका स्त्री पुं नपुंसक लिंगका ज्ञान यथेष्ट होजाताहै जो विद्यार्थी इसको पढकर सिद्धान्तकौमुदीका लिंगानुशासन विचारैंगे तौ उनकी बुद्धिमें वोह अच्छी प्रकार स्थिर होजायगा और जिन्होंने वोह पढलियाहै उन्हें इस पुस्तकके देखनेसे वोही

लिंगानुशासन दर्पणस्थ छायाकी भांति स्पष्ट रूपसे प्रकाशित होजायगा जो विना लिंगानुशासन संस्कृत शब्दोंका लिंग जानना चाहतेहैं उन्हैं यह पुस्तक बहुतहै क्योंकि ग्रंथकर्ताने इसे ऐसी चातुरीसे लिखाहै कि, कोई प्रयोजनीय वार्ता छोड़ी नहीं और इसी कारण ग्रंथकर्ताका श्रम सराहनीयहै व्याकरण पढनेवाले विद्यार्थी इसे अवलोकन करकै संस्कृत लिंगानुशासन पढैंगे तौ उन्हैं बहुत लाभ होगा।

8-12-91 पंडित-ज्वालाप्रसाद मिश्र.

द्वितीयाध्यापक संस्कृतपाठशाला.

मुरादाबाद.

भूमिका।

प्रायः देखा गया कि, संस्कृतके पढनेवाले विद्यार्थी संस्कृत शब्दोंका लिङ्ग जाननेमें बडी कठिनता भोगते हैं। और लिङ्गज्ञानके अर्थ अमरकोशादि बडे २ दुष्कर ग्रंथ मुखस्थ करने पडते हैं। इस कष्टको दूर करनेके अर्थ यह संक्षेप "लिंगबोध व्याकरण" संग्रहकर अति सुगमता पूर्वक हिन्दी भाषामें प्रकाश किया गया। आशा है कि, संस्कृत पाठीगण इस क्षुद्र ग्रंथके पढने मात्रसे लिङ्गज्ञान अति सुगमतासे कर सकैंगे। किन्तु सहृदय पाठकगण निज २ पाठशालाओंमें आदर पूर्वक स्थानदान देकर, इससे विद्यार्थियोंको लाभ पहुँचावैं तब अपना श्रम सार्थक समझूं।

दूसरे यह पुस्तक कारणवशतः विशेष भूल संशोधन पूर्वक प्रकाश न होसकी, अतः स्वपरोपकारी पाठक महाशयोंसे सविनय प्रार्थना है कि, मेरा अपराध क्षमाकर दयापूर्वक इस पुस्तकका दोष दूरकर दासको लिखकर कृतार्थ व चिरबोधित करैं, विज्ञेष्वलमतिविस्तरेण।

सबका दास—पन्नालाल बा. दि जैन.

श्रीपरमात्मने नमः ।

लिङ्गबोध ।

(यह व्याकरणकाही अंशविशेष है)

जिस किसी भाषामें जो कोई शब्द व्यवहार किया जाताहै उसी वक्त लिंगज्ञान अर्थात् कौनसा शब्द कौन लिंगी है तिसके ज्ञान होनेकी आवश्यकता होती है सो वह ज्ञान कहीं तो व्यवहार्य्य शब्दके अनुसार कहीं प्रत्ययके अनुसार अथवा कहीं प्रकृति नियमके वशीभूत होकर संपादन करना पड़ता है अर्थात् वह प्रकरणत्रयमें विभक्तहै यथा—अर्थनियम १ प्रत्ययनियम २ और प्रकृतिनियम ३ परन्तु इस पुस्तकमें सबसे पहले १ साधारण नियमके भी दो सूत्र कहे जाते हैं। वस्तुतः प्रथमसूत्र अर्थ

नियममें और दूसरा सूत्र प्रकृति नियममें गर्भित है किन्तु ये दोनों सूत्र किसी नियमके किसीसूत्र के भी बाधक नहीं बरन् अति सुगम हैं इसी-कारण इन सूत्रोंको ग्रहण करके चतुर्थ श्रेणी साधारण नियमकी प्रगट की गई । अर्थात् प्रथम प्रकरण साधारण नियम १ द्वितीय प्रकरण अर्थ नियम २ तृतीय प्रकरण प्रत्ययनियम ३ चतुर्थ प्रकरण प्रकृतिनियम ४ इन चारों प्रकरणोंका क्रमसे वर्णन होता है ।

प्रथम प्रकरण ।

(साधारण नियम)

पुंवाचकाः पुंलिङ्गाः स्त्रीवाचकाः स्त्रीलिङ्गाः ❋ ॥ १ ॥

पुंवाचक—यथा—पुमान्, ब्रह्मा, पिता, पुत्रः÷

जामाता, होता, भ्राता, औपगवः, देवः,×मनुष्यः, अग्निः, वह्निः, वृष्णिः, राजा, जैमिनिः, व्याघ्रः, कच्छपः, हस्ती, ऋषिः, रविः, वातः, षण्डः,युधिष्ठिरः, रावणः नलः इत्यादि । स्त्रीवाचक—यथा—स्त्री, ब्रह्माणी, माता, कन्या, धात्री, भगिनी, औपगवी, देवी, मानुषी, अग्नायी, स्वाहा, रुक्मिणी, राज्ञी, लीलावती, कच्छपी, हस्तिनी, सती, छाया, क्षतिः, रण्डा, सावित्री, मंदोदरी, दमयन्ती, इत्यादि ।

(तन्मध्ये विशेषः)

❋दारा शब्द स्त्रीवाचक होनेपरभी नित्य पुंलिंगहै और यह शब्द बहुवचनान्तही प्रयुक्त होताहै ।

÷जिन शब्दोंमें पुं० स्त्री० भिन्न अन्यजातीय प्राणी समझा जाय तहांपर नपुंसकलिंग होयगा । यथा—क्षीबम् नपुंसकम् इत्यादि । यह नियम द्विपद, चतुष्पद, प्राणीमात्रमें व्यवहृत होगया । अष्ट पदादिमें नहीं होगा अत

एव मक्षिका शब्द नित्य स्त्रीलिंगहै इसका पुंलिंगमें प्रयोग नहीं होता ।

अपत्य शब्द तोक शब्द नपुंसकलिंग है ।

×दैवत शब्द पुंलिंग और नपुंसकलिंगहै यथा—दैवतम् दैवतः । देवता शब्द स्त्रीलिंगहै ! यातु और रक्षस् शब्द क्लीब लिंगहै ।

कटणथनपभमयरषसोपान्त्याऽकारान्ता उकारान्ताश्च पुम् ॥ २ ॥

कट, प्रभृति १२ वर्णोंका कोई वर्ण उपान्त्यहो ऐसा अकारान्त, उकारान्त, नकारान्त शब्द होय तो उसको पुंलिंग जानना चाहिये । यथा—क—कल्कः, स्तबकः । ट—घटः, पटः, । ण—गुणः, गणः । थ—रथः, अर्थः । न—इनः, फेनः । प—यूपः, दीपः, । भ—स्तम्भः । कुम्भः । म—सोमः, भीमः ।

---

१. अन्त्य वर्णके अव्यवहित पूर्ववर्णको उपान्त्य वर्ण कहते हैं जैसे "कल्क" शब्दमें अन्त्य वर्ण अकारहै और उपान्त्य "क" है इ०

य—हयः, लयः । र—क्षुरः, अंकुरः । ष—वृषः, माषः । स—रासः, पायसः । उकारान्ताः—(प्रभुः ईक्षुः, मेरुः, सेतुः, हनुः, वसुः, नकारान्ताः—(राजन्) राजा, (तक्षन्) तक्षा, (पथिन्) पन्थाः, (मथिन्) मन्थाः,(ऋभुक्षिन्) ऋभुक्षाः इत्यादि ।

(तन्मध्ये विशेषः)

क—चिबुक, चूचुक, शालूक, प्रातिपदिक, अंशक, उल्लुक—ये ६ शब्द क्लीव लिंग हैं। अनीक, सरक, मोदक, चषक, मस्तक, पुस्तक, तडाक, निष्क, वर्चस्क, शुष्क, पिनाक, भांडक, कटक, कंटक, दण्डक, पिटक, विटंक, तालक, फलक, पुलाक, वल्मीक—ये २१ शब्द पुंनपुंसकहैं। जैसे—कण्टकः कण्टकम् इत्यादि । जलौका स्त्रीलिंगहै ।

ट—किरीट, मुकुट, ललाट, वट, वीट, शृंगाट, करट, दिष्ट, लोष्ट, यह ९ क्लीवलिंगहैं । कूट, कुट, कपट, कपाट, कर्पट, नट, निकट, कीट, कट, ये९शब्द पुन्नपुंसकहैं-जैसे—कुटः कुटम् इत्यादि ।

ण—ऋण, लवण, पर्ण, तोरण, रण, उष्ण, कारण, निर्म्माण, ये ८ शब्द नपुंसकहैं, कार्षापण, स्वर्ण, सुवर्ण, वर्ण, व्रण, चरण, वृषण, विषाण, चूर्ण, तृण, ये दश शब्द पुन्नपुंसकलिंगहैं। जैसे कार्षापणः कार्षापणम् इत्यादि।

थ—काष्ठ, पृष्ठ, रिक्थ, उक्थ, ये ४ क्लीबलिंगहैं। तीर्थ, प्रोथ, यूथ, गाथ, प्रोष्ठ ये पांच पुन्नपुंसक हैं। जैसे—तीर्थः, तीर्थम् इत्यादि। दिग्वाची काष्ठशब्द स्त्री-लिंग है। जैसे—काष्ठा काष्ठे काष्ठाः।

न—निदान, प्रधान, धन, वातायन, अंगन, जघन, अजिन, तुहिन, कानन, वन, वृजिन, विपिन, वेतन, शासन, सोपान, मिथुन, श्मशान, रत्न, निम्न, लग्न, चिह्न, ये २१ शब्द क्लीबलिंगहैं। मान, विमान, अभिधान, नलिन, पुलिन, उद्यान, सयान, स्थान, निधन, आसन, चंदन, आलान, सन्मान, वसन, भवन, संभावन, विभावन, खलिन,—ये १८ शब्द पुन्नपुंसकहैं। जैसे—मानः मानम् इत्यादि।

प—पाप, रूप, उडुप, तल्प, शिल्प, पुष्प, शष्प, समीप, अन्तरीप ये ९ शब्द क्लीवलिंगहैं । और शूर्प, कुतप, कुणप, द्वीप, विटप ये पांच शब्द पुन्नपुंसकलिंगहैं । जैसे शूर्पः शूर्पम् इत्यादि ।

भ—तलभ शब्द क्लीव लिंगहै । जृंभ शब्द पुन्नपुंसकहै ।

म—रुक्म, सिध्म, युग्म, इध्म, गुल्म, अध्यात्म, कुंकुम, लूम ये आठ शब्द क्लीव लिंगहैं, संग्राम, दाडिम, कुसुम, आश्रम, क्षेम, क्षौम, उद्दाम, याम,—ये८शब्द पुन्नपुंसकहैं । जैसे संग्रामः संग्रामम् इत्यादि ।

य—किसलय, हृदय, इंद्रिय, उत्तरीय, भागधेय, भाग्य, धान्य, ये ७ शब्द क्लीवलिंगहैं । गोमय, कषाय, मलय, अन्वय, ये ४ शब्द पुन्नपुंसक लिंगहैं । जैसे गोमयः, गोमयम् इत्यादि । शल्यशब्द पुल्लिंग और स्त्रीलिंगहै ।

र—द्वार, अग्र, स्फार, तक्र, वक्र, वप्र, क्षिप्र, क्षुद्र, छिद्र, तीर, नार, नीर, दूर, कृच्छ्र, रंध्र, अभ्र, शुभ्र, भीर, गभीर, क्रूर, केयूर, केदार, उदर, अजस्र, शरीर,

सुषिर, शिबिर, कन्दर, मन्दर, पंजर, अजर, जठर, अजिर, वैर, चामर, पुष्कर, गह्वर, कुटीर, कुलीर, चत्वर, काश्मीर, भिदुर, अम्बर, ये ४३ शब्द क्लीबलिंगहैं । और । वीर्यवाची शुक्र, शब्द तथा केशर, चक्र, वज्र, वप्र, अंधकार, सार, अवार, पार, क्षीर, तोमर, कोटर, शृंगार, भृंगार, मन्दार, उशीर, शफर, तिमिर, शिखर, भहर ये १८ शब्द पुन्नपुंसकलिंग हैं । जैसे—चक्रः, चक्रम्—इत्यादि । शिशिर शब्द हिमार्थमें पुलिंगहै । शीतकालार्थमें पुन्नपुंसकहै । शीतल गुणविशिष्ट पदार्थके अर्थमें तथा जडार्थमें विशेष्यलिंगहै ।

ष—शिरीष,जोष,अम्बरीष,पीयूष,पुरीष,किल्बिष, कल्माष ये७शब्द क्लीबलिंगहैं । करीष,मिष,यूष, विष, वर्ष,ये पांच शब्द पुन्नपुंसकहैं । यथा—करीषः करीषम्,इत्यादि।

स—पनस, बिस, बुस, साहस,—ये चार शब्द क्लीबलिंगहैं । चमस, चरस, निर्य्यास, उपवास, कर्पास, वास, मास, कास, कांस, मांस,—ये १० शब्द पुन्नपुंसकहैं ।

चमसः चमसमित्यादि । वीभत्स शब्द त्रिलिंगहै ।

उ—धेनु, रज्जु, कुहु, सरयु, तनु, वेणु, कण्डु, प्रियङ्गु, ये ८ शब्द स्त्रीलिंगहैं । श्मश्रु, जानु, स्वादु, अश्रु, जतु, खाद्यमधु, त्रपु, तालु, एरु, कसेरु, जत्रु, वस्तु, मस्तु, धनवाची वसु—ये चौदह शब्द नपुंसकहैं। मद्गु, शीधु, सक्तु, सानु, कमंडलु, मुखावयववाची हनु—येद शब्द पुन्नपुंसक लिंगहैं । मद्गुः मद्गु इत्यादि । असु शब्द नित्यबहुवचनान्तहै । असवः प्राणाः ।

द्वितीय प्रकरण ।

(अर्थनियम)

मेदिनी वाणी रजनी सौदामिनी नदी बुद्धि लता दीप्ति तारका तिथि दिक्पर्य्यायाः स्त्री ॥ २ ॥

मेदिनी आदि ११ शब्द तथा उनके जितने पेर्य्याय शब्दहैं वे समस्त स्त्रीलिंगहैं।

यथा–मेदिनी–भूमि, मृत्। वाणी–गीः। रजनिः–निश्, रात्रिः। सौदामिनी–तडित्, विद्युत्। नदी–विपाट्, सरित्। बुद्धिः–चित्, संवित्। लता–वीरुत्, व्रततिः। दीप्तिः–प्रभा, भाः। तारका–अश्विनी, कृत्तिका। तिथिः–प्रतिपत्, कुहूः। दिक्–ककुप्, हरित्।

(तन्मध्ये विशेषः)

तारका–नक्षत्र, ऋक्ष, भ, ये तीन शब्द क्लीवलिंगहैं। सिध्य, तिष्य ये दोनों शब्द पुलिंगहैं। उडु शब्द पुन्नपुंसकहै।

अरि कालात्म स्वर्ग गिरि तरु समुद्र केश दन्त स्तन कर करज कंठ खड्ग शर

---

१ एक अर्थमें जितने शब्द प्रयुक्त होतेहैं उन सबको पर्य्याय शब्द कहतेहैं जैसे दशरथके पुत्र अर्थमें दाशरथिः, रामः, राघवः, रावणारिः, दूर्वादलश्यामलः इत्यादि।

क्रतु कर्द्दम कपोल गुल्फ मेघ रश्मि दिवस निधि विष वर्णवाचिनः पुम् ॥४॥

यथा। अरिः—अरातिः शत्रुः आततायी। कालः समयः दिष्टः। आत्मा—क्षेत्रज्ञः, चेतनः। स्वर्गः—सुरलोकः, नाकः, वैकुंठः। गिरिः—पर्वतः शिखरी, हिमालयः। तरुः वृक्षः, पादपः, प्लक्षः। समुद्रः सागरः, तोयधिः, क्षीरोदः। केशः—शिरोरुहः चिकुरः। दन्तः—रदः, दशनः। स्तनः-कुचः, वक्षोजः। करः—दोः, प्रवेष्टः। करजः—कररुहः पुनर्भवः। कंठः—गलः, वृकः। खड्गः असिः, करवालः, चंद्रहासः। शरः—मार्गणः, पत्री, नागपाशः। क्रतुः—यागः, अध्वरः, अग्निष्टोमः। कर्द्दमः—सादः, जम्बालः। कपोलः—गंडः; कुंभः, गुल्फः—प्रपदः, पादमूलम्। मेघः वारिवाहः, स्तनयित्नुः, आवर्त्तः। रश्मिः—किरणः, मयूखः

दिवसः—घस्रः, वासरः, मध्याह्नः । निधिः शेवधिः, मणिः, कौस्तुभः । विषम्—क्ष्वेडः निर्मोकः रदः । वर्णः—शुक्लः—कृष्णः, हरित्, । इत्यादि ।

(तन्मध्ये विशेषः)

स्वर्ग—त्रिभुवन त्रिविष्टप ये दो शब्द क्लीब लिङ्गहैं। त्रिभुवनम् त्रिविष्टपम् । तथा—द्यो दिव् ये दो शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं यथा द्यो—इयम् द्यौः इमा द्यावः । दिव्—इयं द्यौः इमाः दिवः ।

गिरि—गंधमादन क्लीबलिङ्गहै यथा—गंधमादनम् ।

कर—भुज, बाहु ये दो शब्द पुन्नपुंसक हैं यथा भुजः भुजम्—बाहुः बाहु ।

करज—नख और नखर शब्द पुन्नपुंसकलिङ्ग हैं । नखः नखम् ।

शर—इषु पुन्नपुंसकहै यथा इषुः इषु । अशनि शब्द पुंस्त्रीलिङ्गहै ।

क्रतु—इष्टि स्त्रीलिङ्गहै । राजसूय शब्द क्लीबलिङ्गहै ।

कर्द्दम—पंक, पुल्लिग और क्लीबलिङ्गहैं। पंकः। पंकम्।
मेघ—अभ्र क्लीबलिङ्गहै।

रश्मि—मरीचि शब्द स्त्री और पुंल्लिङ्ग है। दीधिति शब्द स्त्रीलिङ्गहै।

दिवस—दिन, अहन् प्रभात नपुंसकलिङ्ग है। दिनम्। अहः।

विष—गरल, और विष शब्द क्लीबलिङ्गहै। काकोलपुन्नपुंसक है।

गगन वदन नयन वन नगर रण रुधिर विवर मांसेंद्रिय जल जलपुष्प हल बल फल दलानुलेपन धनान्न व्यंजन लवण पुण्य पाप सुख दुःख शुभ हिमोष्ण कार्मुक स्वर्ण लोह ताम्रवाचिनः क्लीबाः ❀ ॥ ५ ॥

यथा—गगनम्—खम् वियत्। वदनम्—आननम्

लपनम् मुखम्। नयनम्-लोचनम् अक्षि। वनम्-काननम् उद्यानम् चैत्ररथम्। नगरम्-पत्तनम् पुरम्। रणम्-युद्धम् मृधम्। रुधिरम्-रक्तम् शोणितम्। विवरम्-छिद्रम्-बिलम्। मांसम्-क्रव्यम् पललम्। इंद्रियम्-खम् हृषीकम्। जलम् कीलालम्, जीवनम्। जलपुष्पम्-कल्हारम् कुमुदम्। हलम्-लांगलम् गोदारणम्। बलम्-वीर्य्यम् स्थानम्। फलम्-आम्रम् आमलकम्। दलम्-पर्णम्, छदनम्। अनुलेपनम्-कुंकुमम् चंदनम्। धनम्-द्रविणम् वित्तम्। अन्नम्-अशनम् भोज्यम्। व्यंजनम्-तेमनम् निष्ठानम्। लवणम्-वंसीरम् सामुद्रम्। पुण्यम्-श्रेयः सुकृतम्। पापम्-किल्बिषम् एनः। सुखम् शर्म शातम्। दुःखम्-कृच्छ्रम्। कष्टम्। शुभम्-मंगलम् कुशलम्। हिमम्-तुहिनम् प्रालेयम्। कार्मुकम्-धनुः कोदंडम् गांडीवम्। स्वर्णम्-हेम कार्त्तस्वरम्। लोहम्-

अयः, कालम् । ताम्रम्-शुल्वम् म्लेच्छमुखम् । इत्यादि ।

(तन्मध्ये विशेषः)

गगन—द्यो और दिव् शब्द स्त्रीलिंगहै । आकाश, विहायस् शब्द पुन्नपुंसकहै ।

वदन—वक्र पुल्लिंगभी होताहै वक्रम्, वक्रः ।

नयन—नेत्र पुल्लिंगभीहोताहै नेत्रम् नेत्रः । वन—अटवी स्त्रीलिंग है । अरण्य पुल्लिंगभी होताहै ।

नगर—पुर और नगर स्त्रीलिंगभी होतेहैं । नगरम् । नगरी । पुरम् पुरी । नगर विशेषका लिंगादि यथाश्रुत जानना क्योंकि, तिसमें कोई नियम प्रवृत्त नहीं होता यथा—पाटलिपुत्रम् काशी कान्यकुब्जः मिथिला ।

रण—समर, अनीक, रण, कलह, विग्रहः ये पांच शब्द पुलिंगभी होते हैं । संयत्, समिति, आजि, समित्, युध्, ये पांच शब्द स्त्रीलिंगहैं । तथा सम्प्रहार प्रभृति कतिपय-प्रत्ययान्त नियममें पुल्लिंगहैं ।

छिद्र—शुषिरं त्रिलिंगहै । शुषिरम् शुषिरः शुषिरा । गर्त्तः अवट पुल्लिंगहै । वपा स्त्रीलिंगहै ।

जल—अप् स्त्रीलिंग और नित्यबहुवचनान्त ही प्रयुक्त होताहै । आपः इमाः । घनरस पुल्लिंगहै ।

जलपुष्प—पद्म, कमल, उत्पल ये तीन शब्द पुल्लिंग-भी देखे जातेहैं ।

हल—सीर पुल्लिंग है ।

बल—शक्ति सार पराक्रम प्रभृति बलवाची होनेपरभी प्रत्ययान्त नियमानुसार लिंगज्ञान होगा ।

फल—हरीतकी अभया प्रभृति कितनेएक शब्द स्त्री-लिंगदेखे जातेहैं ।

दल—छन्द पुल्लिंगहै ।

धन—अर्थ, रै, विभव ये तीन शब्द पुल्लिंगहैं ।

अन्न—ओदन पुलिंग । व्यंजन—इसस्थानपर व्यंजन शब्दमें व्यंजन विशेष भी ग्रहण होगा अतएव दधि तक्रम् अलाबुकम् इत्यादि ।

लवण—सैंधव शब्द पुंलिंगहै । हिम—अवश्याय हिमिका प्रभृति शब्द हिमवाची होने परभी प्रत्ययान्त नियमानुसार नाना लिंग होते रहतेहैं। हिम उष्ण ये शब्द शीतलता अवशिष्ट कोन वस्तुके तथा उष्णता विशिष्ट कोन वस्तुके बोधक होनेपर गुणवाची नियमानुसार त्रिलिंगहोसक्तेहैं ।

पुण्य—धर्म्म पुन्नपुंसकहै । वृष शब्द पुंलिंगहै ।

पाप—पंक पुन्नपुंसकहै । पाप्मन् पुंलिंगहै ।

कार्मुक—गांडीव शब्द पुंलिंगभी होताहै यथा गांडीवम् गांडीवः ।

स्वर्ण—अष्टापद शब्द पुन्नपुंसक लिंगहै ।

लोह—लोह, अयःसार, यह दो शब्द पुन्नपुसंकहैं लोह प्रायः पुंलिंगहै । (प्रत्यय नियम)

आ–ई–ऊ–अनि–मि–नि–ति–ता–प्र-ऽत्ययान्ताः स्त्री ॥ ६ ॥

यथा—आ-प्रजा, विद्या, खट्वा, जरा, भिदा। ई—लक्ष्मीः तेमनी, बाणी, श्रीः। ऊ—कुरूः, चमूः, चम्पूः, भ्रूः। अनि—सरणिः, शरणिः क्षेपणिः, अजनिः। मि—भ्रमिः, शमिः। नि—ग्लानिः, ज्यानिः म्लानिः, हानिः। ति—सम्मतिः, कीर्त्तिः, मतिः। ता—समता, जनता, विद्वत्ता, देवता इत्यादि।

(तन्मध्ये विशेषः)

आ—विश्वपा प्रभृति आकारान्त शब्द " आ " प्रत्ययान्त नहीं हैं। सुधी आदि ईकारान्त शब्द " ई " प्रत्ययान्त नहींहैं। ऊ—दयूप्रभृति ऊकारान्त क्षब्द "ऊ" प्रत्ययान्त नहींहै। अनि--अशनि, भरणि, अरणि ये तीन शब्द पुंलिगहैं। मि—ऊर्मि स्त्री पुंलिंगहै। नि—श्रोणि योनि स्त्रीपुंलिंगहै।

घ—घञ्—अच् अप्—न—अथु—कि—प्रत्ययान्ताः पुम् ❀ ॥ ७ ॥

यथा । घ—छदः प्रच्छदः । घञ्—प्रसेवः, पाकः प्रासः, वेदः, प्रपातः, प्रसादः,आपीडः, वामः।अच् जयः, नयः, । अप्—करः, गरः, लवः, स्तवः-प्लवः—। न—यज्ञः, यत्नः, स्वप्नः । अथु—वेपथुः नन्दथुः । कि—आधिः, व्याधिः इत्यादि ।

घ- भग । अच्—भय, लिंग, पद--ये; चार शब्द क्लीबलिंगहैं । न—याच्ञा स्त्रीलिंगहै । कि—इषुधि स्त्री-पुंलिंग है । विशेषतः इसस्थानपर दा, धा, धातुके उत्तर जो "कि" प्रत्यय होताहै वही समझना चाहिये अन्यत्र जज्ञिःजाज्ञि इत्यादि ।

अस् इस् उस् मन् अन त्र प्रत्ययान्ता भावकर्मार्थ तद्धित प्रत्यया-न्ताश्च क्लीबाः ॥ ८ ॥

यथा—अस्-यशः, पयः । इस्-सर्पिः, हविः । उस्—वपुः, यजुः । मन्—चर्म्म, वर्म्म । अन—कर-णम्, सम्प्रदानम् । त्र—पात्रम्, वहित्रम् । भावार्थत-

द्धित-शुक्लत्वम, शौक्ल्यम् चातुर्य्यम्, सामग्र्यम्, औचित्यम्। कर्मार्थतद्धित-ब्राह्मण्यम्, ब्रह्मचर्य्यम्, स्तेयम, सख्यम्, आधिपत्यम्, कापेयम्, औष्ट्रम्, द्वैहायनम्, अच्छावाकीयम्, इत्यादि ।

(तन्मध्ये विशेषः)

इस्—अर्चिः पुन्नपुंसकलिंगहै । छदिः स्त्रीलिंगहै । मन्—प्रेमन् पुन्नपुंसक लिंगहै। सीमन् स्त्रीलिंगहै । अन—कर्त्रर्थमें अन प्रत्ययान्त शब्द विशेष्यलिंगहै । यथा रमणः पुरुषः रमणी स्त्रीइत्यादि। त्र—भृत्र, अमत्र, मंत्र, चित्र, गरित्र, वृत्र, ये शब्द पुंलिंगहैं । पात्र, पत्र, पवित्र सूत्र ये—चार शब्द पुन्नपुसंकलिंगहैं । छत्र शब्द (छत्ता अर्थमें) क्लीबलिंगहै अन्यत्र पुंलिंगहै ।

स्थूणोर्ण नभि-दुन्दुभि-दर्वि-विदि-वेदि-खन्य-श्रि-कृषि-वेशि-कटयङ्गुलि-नाडि-रुचि-वीचि-धूलि-नालि-कि

कि-केलि-शष्कुलि-राजि-कुटि-क-
टि-भ्रुकुटि-पटि-तटि-त्रोटि-बलि-
चुल्लि-वेणि-खारी-आपत्-गर्मुत्-
ककुद्-दर-दृषद्-उपनिषत्-सम्पच्-
छरत्-संसत्-परिषत्-क्षुन्-मुत्-
समिद्-धुरा-शीषु॰षस्-शुक्-स्रक्
त्वक्-स्रुक्-सृक्-ज्योक्-सिक्-स्फि
ग्-नौ-विदिक्-यवागू-वृट्-त्रट्-कट्
प्रावृट्-विप्रुट् रुट् क्रुध्-उपानद्-
ष्णिहःस्त्री ॥ ९ ॥

(तन्मध्ये विशेषः)

नाभि क्षत्रियवाची पुंलिंगहै । दुन्दुभि शब्द अक्षार्थ मेंही स्त्रीलिंगहै । अन्यार्थ में पुंलिंगहै । गृहशब्द पूर्वक

स्थूण शब्द क्लीबलिंगहै यथा। गृहस्थूणम्। शश शब्द-पूर्वक ऊर्ण शब्द क्लीबलिंगहै शशोर्णम्।

ध्वनि–क्रिमि–दृति–ग्रन्थि–बलि-
मोधि–कौलि–मौलि-पृषन्ति–सारथि-
अतिथि–कुक्षि–बस्तिराशि–अञ्जलि-
कुच–न्युब्ज–पुञ्ज–मुञ्ज–ध्वज–गज-
पृषन्-नल्व-कुन्त-अन्त-व्रात-वंश-अंश-
पुरोडाश–ह्रद–कन्द–कुन्द–युग्म-
शब्द–बुद्बुद–अर्घ–स्तम्ब–नितम्ब-
पूग–पल्लव–पल्वल–सूत–कफ–रेफ-
कटाह–निष्कुह–निर्य्यूह–मठ–सङ्क-
टाह–पतद्ग्रह–तरंग–संग–पुंग-
मृदंग–गन्ध–न्याद–सीमन्त-
पुंख–न्युंख–शंख–समुद्र–लगुड–

पिण्ड--गोण्ड--पिचिण्ड--पुत्यण्ड-
सरण्ड--पोगण्ड--करण्ड--वरण्ड--तर-
ण्ड--प्रचण्ड--प्रकाण्ड--दण्ड--झष-
पट्टिश--कासमर्द्द--विप्लुषः पुम् ॥१०॥
सत्य--व्रत--दैव--पीठ--निमित्त--विश्व-
कुटम्ब--धान्य--आज्य--शस्य--रजत--
रूप्य--पण्य--मूल्य-हव्य--जगद्र--अक्ष-
द्वन्द्व--कुण्ड--अङ्ग-हव्य--कव्य--काव्य
उक्थ--वैकल्य--दोहद--क्रोड--पलित-
तूर्य्य--नृत-अमृत-स्पद-वृत्त--कूवचूछ-
कृत्--यकृत--पृषत्--सकृच्--छिक्य-
कुड्य--मद्य--बडिश--वृन्द--निकुरम्ब-
कदम्ब--म्लेच्छ--गुच्छ--शफ-
बर्ह--दुःख--कवच--धिष्ण्य--श्राद्ध-

कुलिश-अद्धा-र्द्ध-सिद्धा-नन्ध-निज करजा-ण्ड-भाण्ड-कण-कणिश-बीज-सक्थयोलोपान्त्याश्चक्लीबाः ११

लकारोपान्त यथा-कुलम्, स्थलम् बलमित्यादि ।

(तन्मध्ये विशेषः)

कोलाहल, कल, कलकल, प्रवाल, मर्द्दल, काल, तूल, उपल, ताल, कसूल, तरल, कम्बल, देवल, वृषल, ये-१४ शब्द पुंलिंगहैं । शील, मूल, मंगल, शाल, कमल, तल, मुषल, कुण्डल, कुड्मल, पलल, पलाल, मृणाल, मुकुल, वाल, विडास, निगल, खिल, शूल, ये-१८ शब्द पुन्नपुंसकलिंगहै । यथा-शीलम् शीलः इत्यादि । मण्डल शब्द त्रिलिंगहै । स्थल शब्द पुंलिंग औरस्त्रीलिंगहै । स्थलः स्थली ।

एकाद्यष्टादशपर्यन्ताः संख्या विशे

ष्यलिंगाः एकोनविंशत्याद्यष्टनवति पर्य्यन्ताः स्त्रीलिंगाः एकोनशताद्याः क्लीबाः ॥ १२ ॥

एकसे अष्टादश पर्य्यन्त संख्यावाची शब्द विशेष्यलिंगहैं । अर्थात् विशेष्यका जहांपर जैसा लिंग होगा वहांपर वैसा ही लिंग एक आदि संख्याका जानना यथा-एकः पुरुषः एका स्त्री एकं वनम्, , द्वौ वृक्षौ, द्वे लते, द्वे फले, त्रयः कालाः तिस्रः विद्याः, त्रीणि पत्तनानि इत्यादि ।

एकोनविंशति से अष्टनवति पर्य्यन्त संख्यावाची शब्द स्त्रीलिंगहैं । यथा—एकोनविंशतिः *

* एकोनविंशति से संख्या एक वचनान्त द्वित्व बहुत्व विवक्षामें द्विवचनान्तभी होताहै किन्तु तब द्विगुण बहुगुण अर्थभी होताहै यथा एकोनविंशती कहनेपर अष्टत्रिंशत् समझा जाताहै शतानि बोलनेपर अनेक शत जाना जाताहै ।

नद्यः एकोनविंशतिः गिरयः एकोनविंशतिः व-
नानि एवं विंशतिः एकविंशतिः इत्यादि ।

एकोनशतप्रभृति संख्या *क्लीबलिंगहै, यथा
एकोनशतम् लताः शतम् यागाः एकशतम्
कुसुमानि एवं द्विशतम् त्रिशतम् इत्यादि ।

**गुणवाचिनः सर्वनामशब्दा बहुव्रीहिस-
मासनिष्पन्नाश्च विशेष्यलिंगाः ॥ १३ ॥**

शुक्ल, कृष्ण, पटु, मृदु प्रभृति गुणवाची, स-
र्व विश्व प्रभृति सर्वनाम, बहुव्रीहि समाससे निष्प
न्न × इन तीनों श्रेणियोंके शब्द विशेष्य
लिंगी होते हैं ।

---

* शत सहस्र अयुत प्रयुत—यह चार शब्द पुंलिंग और
क्लीब लिंग दोंनों प्रकारही देखे जातेहैं । यथा शतम् शतः सह
स्रम् सहस्रः इत्यादि । कोटि शब्द स्त्रीलिंगहै लक्ष शब्द स्त्री
लिंग और क्लीब लिङ्ग उभय रूपही देखे जाते हैं।लक्षा लक्षम् इत्यादि ।

× प्रादि समासकाभी इस्में ग्रहण होगा । अत एव अतिमालः—

यथा। शुक्लः पटः सर्वे जीवाः गृहीतदण्डः राजा—इस स्थानपर पट जीव राजा ये तीन शब्द विशेष्य और पुंलिंगहैं अतएव शुक्ल सर्व गृहीतदंड ये तीनों शब्दभी पुंलिंग हुये। शुक्ला शाटी सर्वाः नद्यः मातृबला कन्या·इस स्थानपर शाटी, नदी, कन्या, ये तीनों विशेष्यस्त्रीलिंगहैं अतएव उक्त तीनों शब्दभी स्त्रीलिंग होगये। शुक्लम् वस्त्रम्, सर्वाणि धनानि, हततरु वनम्—इस स्थानपर वस्त्र, धन, हततरु, ये तीनों शब्द क्लीबलिंगहैं अतएव शुक्ल, सर्व, हततरुभी नपुंसक लिंगी होगये। तथा—पटुः, पट्वी, पटु, मृदुः, मृद्वी मृदु। शान्तः शान्ताःशान्तम्। दुष्टः दुष्टा दुष्टम्। नम्रः नम्रा नम्रम्।विज्ञः विज्ञा विज्ञम्। निपुणःनिपुणा निपुणम्। सुन्दरः सुन्दरी सुन्दरम् इत्यादि।

—अतिमाला अतिमालम्। निर्वनः निर्वना निर्वनम्। अवकोकिलः अवकोकिला, अवकोकिलम् इत्यादि।

इमे इमाः इमानि । उभौ उभे उभे भवान् भवती भवत् । अन्यः अन्या अन्यत् । सः, सा, तत् । कः का किम् । इत्यादि । नीलाम्बरः नीलाम्बरी नीलाम्बरम् । बहुवन्ध्यः बहुवन्ध्या बहुवन्ध्यम दीर्घजंघः दीर्घजंघा दीर्घजंघम् । कृतिपुत्रकः कृतिपुत्रका कृतिपुत्रकम् । अपुत्रः अपुत्रा अपुत्रम् खुरणसः खुरणसा खुरणसम् । आशुजातः आशुजाता आशुजातम् इत्यादि ।

द्वन्द्व-तत्पुरुषनिष्पन्नाः परपदलिंगाः ॥

द्वन्द्व तथा तत्पुरुष* में समास करनेके पहले उत्तर पदका जो लिंग होगा वही लिंग समास निष्पन्न होनेपर उस उभय पदात्मक शब्दकाभी होगा । यथा—द्वन्द्व—महीधनम् इस स्थलमें धन

---

* कर्मधारय समासकाभी तत्पुरुष में ग्रहण होताहै अत एव (परमा+प्रीतिः) परमप्रीतिः (न+अश्वः) अनश्वः इत्यादि ।

शब्द उत्तर पद और नपुंसक लिंगहै अत एव इन दोनों शब्दोंमें द्वन्द्व समास निष्पन्न होनेपर उस उभयपदात्मक महीधन शब्दको क्लीब लिंग जानना चाहिये। इसी प्रकार मतिः मानम्—अर्थः मतिमानार्थाः इत्यादि। तत्पुरुष (लतायाः-वनम्) लतावनम् (वनस्य तरुः) वनतरुः इत्यादि।

(तन्मध्ये विशेषः)

(क) पुण्याह, सुदिनाह, ये दो शब्द नपुंसकलिंग हैं।
(ख) संख्या अव्यय पूर्वक अकारान्त पथिन् शब्द नपुंसकलिंगहै। यथा—त्रिपथम् विपथम् इत्यादि।
(ग) राजपर्य्याय शब्द पूर्वपद और सभा शब्द उत्तर ईदृश तत्पुरुष निष्पन्न शब्द क्लीबलिंगहै। यथा—इन-सभम्. ईश्वरसभम् और यक्षसभम् पिशाचसभम् इत्यादि किन्तु राजवाची कोन नाम अथवा राजन् शब्द

अथवा राजविशेष शब्द पूर्वपद होनेपर अथवा गृहार्थ प्रकाश होनेपर यह नियम नहीं रहता—यथा—चंद्रगुप्त सभा, देवसभा, राजसभा, नृपतिसभा, सम्राट्सभा, धर्मसभा, इत्यादि। संहति अर्थमें सभान्त तत्पुरुष क्लीवलिंग होताहै। यथा—स्त्रीसभम्, गोसभम् इत्यादि। (घ) पूर्वपद बहुवचनान्त होने पर छायान्त तत्पुरुष स्त्रीलिंग होताहै। यथा—इक्षूणाम् छाया—इक्षुच्छायम् इत्यादि। (ङ) सेना, सुरा, छाया, शाला, निशा,—इन पांच शब्दोंमेंसे कोई शब्द उत्तरपद होय ऐसे तत्पुरुष समास निष्पन्न शब्द क्लीवलिंग और स्त्रीलिंग होते हैं। यथा—ब्राह्मणसेना। यवसुरम् यवसुरा। कुड्यच्छायम् कुड्यच्छाया। गोशालम् गोशाला। श्वनिशम् श्वनिशा। इत्यादि। किन्तु कर्मधारयसमासमें यह नियम नहींहै यथा—परमसेना असेना इत्यादि।

अव्ययीभावाः क्रियावाचकाःसमा

**हारनिषपन्नाः क्रियाव्ययविशेषणा-
नि च क्लीबाः ॥१५॥**

यथा । अव्ययीभावः ❋ अधिस्त्रि, अधिगोपम्, उपवधु । क्रियाशब्दाः÷—हसनम्, हसितम्, गमनम्, शयनम्, ध्यानम्, नमितम्, भवितव्यम्, स्थेयम्, जागरणीयम् । समाहारद्विगुनिष्पन्नाः×-पंचगवम्, चतुरजम्, त्रिसूकरि, द्विकर्केन्ध ।

❋ अव्ययीभावसमासनिष्पन्न शब्दोंमें सकल विभक्तियों-का रूप नहीं होता, उन्में बहुधा प्रथमाका एकवचन मात्र देखा जाताहै । अदंत अव्ययीभावमें कहीं २ तृतीया और सप्तमी विभक्तिका एकवचनभी देखा जाताहै । यथा—अपदिशेन अपदिशे इत्यादि ।

÷ क्रियाशब्द एक वचनान्तही प्रयुक्त होताहै हत्या शब्द स्त्रीलिंग है ।

× जो समाहार द्विगुमें उत्तरपद अदन्त होयतो स्त्रीलिंग होताहै । यथा—(त्रि × लोक) त्रिलोकी । कहीं २ इस नियमका व्यभि-

समाहारद्वन्द्वनिष्पन्नाः—दन्तोष्ठम्, कुशकाशम्, पाणिपादम् । गंगाशोणम्, वाक्त्वचम्, त्वक्स्रजम् । शमीदृषदम्, वाक्त्विषम्, छत्रोपानहम् । क्रियाविशेषणम् -मन्दं पचति, मृदु पचति, मिष्टम्वदति । मधुरंहसति । मन्थरं गच्छति । प्लुतं धावति । अव्ययविशेषणम्—रम्यं स्वः, बहु उच्चैः, शतंधिक् ।

चारभी देखा जाताहै । यथा—(पंच×पात्र) पंचपात्रम् (त्रिभुवन) त्रिभुवनम् (चतुर्युग) चतुर्युगम् । जिस समाहार द्विगुमें उत्तरपद "आ" प्रत्ययान्त होयतो वह स्त्रीलिंग और क्लीब लिंग उभय प्रकारही देखाजाताहै । यथा—(पंच×खट्वा) पंचखट्वी, पंचखट्वम् इत्यादि ।

१ समाहार द्वन्द्वनिष्पन्न शब्द प्रायः एकवचनान्तही प्रयुक्त होतेहैं । किन्तु दधि पयः प्रभृति कितने एक शब्दोंमें यह नियम नहीं रहता । यथा—दधिपयः दधिपयसी दधिपयांसि, ऋक्सामे ऋक्सामानि इत्यादि । इसी प्रकार द्रव्यका बोधन करनेकी इच्छा-होय तब उस नियमका अनुरोध लक्षित नहीं होता यथा—दश दन्तोष्ठाः । द्वे पाणिपादे इत्यादि ।

॥ शेषाः पुन्नपुंसकाः ॥ १६ ॥

जो शब्द किसी नियम में नियमित न होय उसको पुंनपुंसकलिंग जानना चाहिये ।

यथा– घृतः घृतम्, लोहितः लोहितम्, शृंगः शृंगम्. दंडः दंडम्, शवः शवम्, पुच्छः पुच्छम्, अर्धर्चः अर्धर्चम् इत्यादि ।

घृत शब्द प्रकृति नियम में नियमित नहीं हो सक्ता; जिस हेतुसे प्रकृति नियामक सूत्रमें इसका ग्रहण नहीं. एवं प्रत्ययान्त नियममेंभी नियमित नहीं होसक्ता, जिस हेतुसे जिन प्रत्ययान्तोंका नियम किया गया है तिनका कोईभी प्रत्ययान्त घृत शब्द नहीं है । इसी तरह अर्थ नियम में भी नियमित नहीं होसक्ता, जिस हेतुसे अर्थोंका नियम किया गया है उन सब अर्थोंका घृत शब्दमें कोई भी अर्थ नहीं । यह शब्द संख्यावाचक[१], गुणवाचक[२], क्रिया वाचक[३], सर्वनाम[४], अव्ययीभाव[५], द्वन्द्व[६], समाहार[७];